قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ.

إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ (سورة الزمر 9)

इल्म और ज़िक्र

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब क़ासमी

Dr. Maulana Mohammad Najeeb Qasmi

www.najeebqasmi.com

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ.

إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ (سورة الزمر 9)

इल्म और ज़िक्र

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब क़ासमी

www.najeebqasmi.com

All rights reserved
सभी अधिकार लेखक के लिये सुरक्षित हैं

इल्म और ज़िक्र
Knowledge and Remembrance

By
डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब क़ासमी
Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

http://www.najeebqasmi.com/
najeebqasmi@gmail.com
MNajeeb Qasmi - Facebook
Najeeb Qasmi - YouTube
Whatsapp: 00966508237446

पहला हिंदी संस्करण: मार्च 2016

Address for Gratis Distribution मुफ़्त मिलने का पताः
Dr. Mohammad Mujeeb, Deepa Sarai, Sambhal, UP (2044302) India
डा. मोहम्मद मुजीब, दीपा सराय, सभंल, यूपी, इण्डिया (244302)

विषय-सूची

क्र.	विषय	पेज नं
1	प्रस्तावना: मोहम्मद नजीब क़ासमी संभली	5
2	मुखबंध: हज़रत मौलाना अबुल क़सिम नोमानी	8
3	मुखबंध: मौलाना मोहम्मद असरारूल हक़ क़ासमी	9
4	मुखबंध: प्रोफेसर अखतरूल वासे साहब	10
5	इल्म की रौशनी, मदारिस का निसाबे तालीम और अज़ीम खिदमात	11
6	इल्म की अहमियत क़ुरान व हदीस की रौशनी में	11
7	मदारिस का क़याम	15
8	मदारिस के क़याम का मक़सद	17
9	मदारिस में क्या पढ़ाया जाता है?	17
10	मदारिस के निसाब में तब्दीली	17
11	मदारिस की चंद अहम खिदमात	20
12	असरी दरसगाहों में दीनी तालीम व तरबियत की ज़िम्मेदारी	25
13	दुआ मोमिन का अज़ीम हथयार है	27
14	दुआ की हक़ीक़त	27
15	दुआ की ज़रूरत	27
16	दुआ की अहमियत	28
17	दुआ के चंद अहम आदाब	30
18	दुआ के चंद अहम अरकान, शरायत और वाजिबात	30
19	दुआ केक चंद अहम मुस्तहबात (वह उमूर जिनका दुआ के वक़्त एहतेमाम करना बेहतर है)	32

20	वह उमूर जिनका दुआ के वक़्त करना ममनू या मकरूह है	33
21	क़बूलियते दुआ के बाज़ औक़ात व हालात	34
22	दुआ क़बूल होने के चंद अहम मुकामात	35
23	मुस्तजाबुद दावात बन्दे	36
24	दुआ के क़बूल होने की अलामत	39
25	ज़िक्र इलाही	41
26	ज़िक्र इलाही के लिए तसबीह या बाएं हाथ का इस्तेमाल	44
27	तसबीह के मुतअल्लिक़ मशहूर उलमाए किराम के अक़वाल	46
28	दरूद शरीफ की अहमियत और उसके फज़ाइल	50
29	दरूद शरीफ पढ़ने के फज़ाइल	51
30	दरूद पढ़ने के अहम मवाक़े	53
31	लेखक का परिचय	55

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيْم
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن،وَالصَّلاة وَالسَّلامُ عَلَى النَّبِيِّ الْكَرِيم وَعَلىٰ آله وَاَصْحَابه اَجْمَعِيْن.

प्रस्तावना

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ आखरी नबी हैं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत अंतरराष्ट्रीय भी है, यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़बिला कुरैश या अरबों के लिए नहीं बल्कि पुरी दुनिया के लिए, इसी तरह सिर्फ उस ज़माना के लिए नहीं जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए बल्कि क़ियामत तक आने वाले तमाम इंसान व जिन्नात के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए। क़ुरान व हदीस की रौशनी में उम्मते मुस्लिमा खास कर उलमा-ए-दीन की ज़िम्मेदारी है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद दीने इस्लाम की हिफाज़त करके क़ुरान व हदीस के पैगाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाऐं। चूनांचे उलमा-ए-कराम ने अपने अपने ज़माने में मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से इस ज़िम्मेदारी को अंजाम दिया। उलमा-ए-कराम की क़ुरान व हदीस की खिदमात को भुलाया नहीं जा सकता है और इंशा अल्लाह उलमा-ए-कराम की इल्मी खिदमात से कल क़ियामत तक इस्तिफादा किया जाता रहेगा। अब नई टेक्नोलॉजी (वेबसाइट, वाटस ऐप, मोबाइल ऐप, फेसबुक और यूट्यब वगैरह) को दीने इस्लाम की खिदमात के लिए उलमा-ए-कराम ने इस्तेमाल करना शुरू तो कर दिया है मगर इसमें मज़ीद काम करने की सख्त ज़रूरत है।

अलहमदु लिल्लाह बाज़ दोस्तों की टेक्निकल समर्थन और बाज़ मुहसिनीन के माली योगदान से हमने भी दीने इस्लाम की खिदमात के लिए नई टेक्नोलॉजी के मैदान में घोड़े दौड़ा दिए हैं ताकि इस

अंतरिक्ष (जगह) को एसी ताक़तें पुर न कर दें जो इस्लाम और मुस्लमानों के लिए नुक़सानदेह साबित हों। चूनांचे 2013 में वेबसाइट (www.najeebqasmi.com) लांच की गई, 2015 में तीन ज़बानों में दुनिया की पहली मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) और फिर दोस्तों के तक़ाजा पर हाजियों के लिए तीन ज़बानों में खुसूसी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) लांच की गई। हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बहुत से उलमा ने दोनों ऐपस के लिए प्रशंसापत्र लिख कर अवाम व ख्वास से दोनों ऐपस से इस्तिफादा करने की दरखास्त की। यह प्रशंसापत्र दोनों ऐपस का हिस्सा हैं। ज़माने की रफ्तार से चलते हुए क़ुरान व हदीस की रौशनी में मुख्तसर दीनी पैगाम खुबसूरत इमेज की शकल में मुख्तलिफ सूत्रों से हज़ारों दोस्तों को पहुंच रहे हैं जो अवाम व ख्वास में काफी मक़बूलियत हासिल किए हुए हैं।

इन दोनों ऐपस (दीने इस्लाम और हज्जे मब्रूर) को तीन ज़बानों में लांच करने के लिये मेरे तक़रीबन 200 मज़ामीन का अंग्रेज़ी और हिन्दी में तर्जुमा करवाया गया। तर्जुमा के साथ ज़बान के माहिरीन से एडिटिंग भी कराई गई। हिन्दी के तर्जुमा में इस बात का ख्याल रखा गया कि तर्जुमा आसान ज़बान में हो ताकि हर आम व खास के लिए इस्तिफादा करना आसान हो।

अल्लाह के फज़ल व करम और उसकी तौफीक़ से अब तमाम मज़ामीन के अंग्रेज़ी और हिन्दी अनुवाद को विषय के एतेबार से किताबी शकल में तरतीब दे दिया गया है ताकि इस्तिफादा आम किया जा सके, जिसके ज़रिया 14 किताबें अंग्रेज़ी में और 14 किताबें हिन्दी में तय्यार हो गई हैं। उर्दू में प्रकाशित 7 किताबों के अलावा 10 नई किताबें छपने के लिए तय्यार कर दी गई हैं।

इस किताब (इल्म और ज़िक्र) में क़ुरान व हदीस की रौशनी में इल्म की अहमियत, मदारिस के निसाबे तालीम और अज़ीम खिदमात पर तफसील के साथ रौशनी डाली गई है। दुआ और ज़िक्र से मुतअल्लिक़ बहुत से मज़ामीन (दुआ मोमिन का अज़ीम हथ्यार, ज़िक्र इलाही और उसके लिए तसबीह या बायें हाथ का इस्तेमाल और दरूद शरीफ की फज़ीलत) भी किताब में शामिल कर लिए गए हैं ताकि इस्तिफादा आम हो सके।

अल्लाह तआला से दुआ करता हूं कि इन सारी खिदमात को क़ुबूलियत व मक़बूलियत से नवाज़ कर मुझे, ऐपस की तायीद में लेटर लिखने वाले उलमा-ए-कराम, टेक्निकल सपोर्ट करने वाले अहबाब, माली योगदान पेश करने वाले मुहसिनीन, मुतर्जिमीन, एडिटिंग करने वाले हज़रात खास कर जनाब अदनान महमूद उसमानी साहब, डिज़ाइनर और किसी भी क़िसम से तआवुन पेश करने वाले हज़रात को दोनों जहां की कामयाबी व कामरानी अता फरमाये। आखिर में दारूल उलूम देवबन्द के मुहतमिम हज़रत मौलाना मुफ्ती अबुल क़ासिम नुमानी साहब, मौलाना मोहम्मद असरारूल हक़ क़ासमी साहब (मेंबर ऑफ़ पार्लियामेंट) और प्रोफेसर अखतरूल वासे साहब (लेसानियात के कमिशनर, मंत्रालय अक़लियती बहबूद) का शुक्र गुज़ार हूं कि उन्होंने अपनी मसरूफियात के बावजूद प्रस्तावना लिखा। डॉक्टर शफाअतुल्लाह खान साहब का भी मशकूर हूं जिनकी मेहनतों से यह प्रोजेक्ट मुकम्मल हूआ।

मोहम्मद नजीब क़ासमी संभली (रियाज़)

14 मार्च, 2016 ई॰

(Mufti) Abul Qasim Nomani
Mohtamim (VC) Darul Uloom Deoband

(مفتی) ابو القاسم نعمانی
مہتمم دار العلوم دیوبند، الہند

PIN- 247554 (U.P.) INDIA Tel: 01336-222429, Fax: 01336-222768 E-mail: info@darululoom-deoband.com

Ref. No.....

Date:.....

باسمہ سبحانہ وتعالیٰ

جناب مولانا محمد نجیب قاسمی سنبھلی مقیم ریاض (سعودی عرب) نے دینی معلومات اور شرعی احکام کو زیادہ سے زیادہ اہل ایمان تک پہونچانے کے لئے جدید وسائل کا استعمال شروع کرکے، دینی کام کرنے والوں کے لیے ایک اچھی مثال قائم فرمائی ہے۔

چنانچہ سعودی عرب سے شایع ہونے والے اردو اخبار (اردو نیوز) کے دینی کالم (روشنی) میں مختلف عنوانات پر ان کے مضامین مسلسل شایع ہوتے رہتے ہیں۔ اور موبائل ایپ اور ویب سائٹ کے ذریعہ بھی وہ اپنا دینی پیغام زیادہ سے زیادہ لوگوں تک پہونچا رہے ہیں۔ ایک اچھا کام یہ ہوا ہے کہ زمانہ کی ضرورت کے تحت مولانا نے اپنے اہم اور منتخب مضامین کے ہندی اور انگریزی میں ترجمے کرادیئے ہیں، جو الیکٹرونک بک کی شکل میں جلد ہی لانچ ہونے والے ہیں۔

اور امید ہے کہ مستقبل میں یہ پرنٹ بک کی شکل میں بھی دستیاب ہوں گے۔

اللہ تعالیٰ مولانا قاسمی کے علوم میں برکت عطا فرمائے اور ان کی خدمات کو قبول فرمائے۔ مزید علمی افادات کی توفیق بخشے۔

ابوالقاسم نعمانی غفرلہ
مہتمم دارالعلوم دیوبند
۱۴۳۷/۶/۳ھ

مولانا محمد اسرار الحق قاسمی
Mohammad Asrarul Haque
Member of Parliament
(Lok Sabha)
Ref. No. MP/19/KNR/2016

16, South Avenue, New Delhi-110011
Ph.: 011-23785046 Telefax: 011-23795314
E-mail: mahaqqasm@gmail.com

Date 19/03/2016

تاثرات

عصر حاضر میں دینی تعلیمات کو جدید آلات و وسائل کے ذریعہ عوام الناس تک پہنچانا وقت کا اہم تقاضہ ہے، اللہ کا شکر ہے کہ بعض دینی، معاشرتی اور اصلاحی فکر رکھنے والے حضرات نے اس سمت میں کام کرنا شروع کر دیا ہے، جس کے سبب آج انٹرنیٹ پر دین کے تعلق سے کافی مواد موجود ہے۔ اگر چہ اس میدان میں زیادہ تر مغربی ممالک کے مسلمان سرگرم ہیں لیکن اب ان کے نقشِ قدم پر چلتے ہوئے مشرقی ممالک کے علماء و داعیان اسلام بھی اس طرف متوجہ ہو رہے ہیں جن میں عزیزم ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی صاحب کا نام سرفہرست ہے۔ وہ انٹرنیٹ پر بہت سا دینی مواد ڈال چکے ہیں، باضابطہ طور پر ایک اسلامی و اصلاحی ویب سائٹ بھی چلاتے ہیں۔

ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی کا قلم رواں دواں ہے۔ وہ اب تک مختلف اہم موضوعات پر سینکڑوں مضامین اور کئی کتابیں لکھ چکے ہیں۔ ان کے مضامین پوری دنیا میں بڑی دلچسپی کے ساتھ پڑھے جاتے ہیں۔ وہ جدید ٹکنالوجی سے بخوبی واقف ہونے کی وجہ سے اپنے مضامین اور کتابوں کو بہت جلد دنیا بھر میں ایسے ایسے لوگوں تک پہنچا دیتے ہیں جن تک رسائی آسان کام نہیں ہے۔ موصوف کی شخصیت علوم دینی کے ساتھ علوم عصری سے بھی آراستہ ہے۔ وہ ایک طرف عالم دین ہیں، تو دوسری طرف ڈاکٹر و محقق بھی اور کئی زبانوں میں مہارت بھی رکھتے ہیں اور اس پر مستزاد یہ کہ وہ فعّال و متحرک نوجوان ہیں۔ جس طرح وہ اردو، ہندی، انگریزی اور عربی میں دینی و اصلاحی مضامین اور کتابیں لکھ کر عوام کے سامنے لا رہے ہیں، وہ اس کے لئے تحسین اور مبارک باد کے مستحق ہیں۔ ان کی شب و روز کی مصروفیات و جدوجہد کو دیکھتے ہوئے ان سے یہ امید کی جا سکتی ہے کہ وہ مستقبل میں بھی اسی مستعدی کے ساتھ مذکورہ تمام کاموں کو جاری رکھیں گے۔ میں دعا گو ہوں کہ باری تعالیٰ ان سے مزید دینی، اصلاحی اور علمی کام لے اور وہ اکابرین کے نقش قدم پر گامزن رہیں۔ آمین!

مخلص

(مولانا) محمد اسرار الحق قاسمی
ایم. پی. لوک سبھا (انڈیا)
وصدر آل انڈیا تعلیمی و ملی فاؤنڈیشن، نئی دہلی
Email:asrarulhaqqasmi@gmail.com

प्रो. अख़्तरूल वासे
आयुक्त
PROF. AKHTARUL WASEY
Commissioner

सत्यमेव जयते

भाषाजात अल्पसंख्यकों के आयुक्त
अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय
भारत सरकार
Commissioner for Linguistic Minorities in India
Ministry of Minority Affairs
Government of India

تقریظ

اطلاعاتی انقلاب برپا ہونے کے بعد جس طرح ہر قسم کی معلومات انٹرنیٹ کے ذریعہ آنکھوں کی دو پتلیوں میں سما گئی ہیں۔ اس نے ''گاگر میں ساگر'' اور ''کوزے میں دریا'' کے تخیلاتی تصورات کو نہ صرف حقیقت بنا دیا ہے بلکہ ان پر ہمارا انحصار روز بروز ناگزیر ہوتا جا رہا ہے۔ گوگل (Google) ہو یا وکی پیڈیا (Wikipaedia) یا پھر دوسری سوشل سائٹس انہوں نے ترسیل وابلاغ کو وہ ہمہ جہت رخ اور رفتار کی تیزی عطا کی ہے کہ فراق وفصل کے تمام تصورات بے معنیٰ ہو کر رہ گئے ہیں۔ لیکن اس اطلاعاتی انقلاب نے ایک پیچیدہ مسئلہ یہ پیدا کر دیا ہے کہ اطلاعات رسانی اور خبروں تک رسائی میں حقائق سے گریز یا ان کو مسخ کرنے کا چلن بھی اس طرح شامل ہو گیا ہے اور اس سچائی کو اسلام اور مسلمانوں سے بہتر کون جانتا ہے۔ دوسرا سنگین مسئلہ یہ ہے کہ باخبر ہونے اور معلومات حاصل کرنے کے لئے اب مطالعہ کی عادت لوگوں میں خاصی کم ہوتی جا رہی ہے۔ کیونکہ موبائیل کے روپ میں دنیا ان کی مٹھی میں سمائی رہتی ہے اور وہ سب کچھ اسی کے ذریعہ جاننا چاہتے ہیں۔ اس چیلینج اور مسئلے کے حل کے لئے ضروری ہے کہ ہم غلط بیانیوں اور حقائق کو دنیا پر آشکار کرنے کے لئے اور اپنے ہم مذہبوں خاص طور پر نئی نسل کو صحیح معلومات فراہم کرنے، انہیں رہنمائی دینے اور ان کے شعور میں بالیدگی اور پختگی لانے کے لئے اس اطلاعاتی انقلاب کے جتنے بھی وسائل وذرائع ہیں ان کا بھرپور استعمال کریں۔

مجھے خوشی ہے کہ ہمارے ایک موقر اور معتبر عالم حضرت دین مولانا محمد نجیب قاسمی نے جو از ہر ہند دارالعلوم دیوبند کے قابل فخر ابنائے قدیم میں سے ہیں اور عرصہ سے مملکت سعودی عرب کی راجدھانی ریاض میں برسر کار ہیں، انہوں نے اس ضرورت کو بخوبی سمجھا اور دنیا کی پہلی اسلامی موبائیل ایپ ''دین اسلام'' اور ''حج مبرور'' اردو، انگریزی اور ہندی میں تیار کیا تھا اور اب وقت گزرنے کے ساتھ نئے سوالات کی روشنی اور علمی ضرورتوں کے تحت نئے مضامین اور نئے بیانات شامل کر کے ایک دفعہ پھر نئے انداز کے ساتھ پیش کرنے جا رہے ہیں۔ مزید برآں زندگی کے مختلف پہلوؤں پر دین کے حوالہ سے دو سو مضامین کے الیکٹرونک ایڈیشن کو بھی منظر عام پر لایا جا رہا ہے۔ مجھے وقتاً فوقتاً محترم مولانا محمد نجیب قاسمی صاحب کے مقالے، الیکٹرانک مضامین اور علمی فتوحات سے استفادہ کرنے کا موقعہ ملتا رہا ہے۔ مجھے ان کے متوازن، اعتدال پسند اور عالمانہ اندازِ تحریر نے ہمیشہ متاثر کیا۔ میں مولانا نجیب قاسمی کی خدمت میں ہدیۂ تبریک وتشکر پیش کرتا ہوں اور خدا سے دعا کرتا ہوں کہ وہ ان کی عمر میں درازی، علم میں اضافہ اور قلم میں مزید پختگی عطا فرمائے۔ کیونکہ:

ستاروں سے آگے جہاں اور بھی ہیں
ابھی عشق کے امتحاں اور بھی ہیں

(پروفیسر اختر الواسع)
سابق ڈائریکٹر: ذاکر حسین انسٹی ٹیوٹ آف اسلامک اسٹڈیز
سابق صدر: شعبہ اسلامک اسٹڈیز جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی
سابق وائس چیرمین: اردو اکادمی، دہلی

14/11, जाम नगर हाउस, शाहजहाँ रोड, नई दिल्ली–110011
14/11, Jam Nagar House, Shahjahan Road, New Delhi-110011
Tel: (O) 011-23072651-52 Email: wasey27@gmail.com Website: www.nclm.nic.in

इल्म की रौशनी,
मदारिस का निसाबे तालीम और अज़ीम खिदमात

इल्म की अहमियत क़ुरान व हदीस की रौशनी में

इंसान ने जब से शऊर की आंखें खोली हैं इल्म की अहमियत मुसल्लम रही है, कायनात की तमाम मखलूकात पर हज़रत इंसान की बरतरी इल्म की वजह से ही है। अल्लाह तआला ने क़ुरान करीम की पहली वही की इब्तिदा लफ्जे ''इकरा'' से फरमा कर क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों को जेवर इल्म से आरास्ता होने का पैगाम दिया और ''बिस मिकल्लजी खलक'' और उसके बाद की आयात से उस इल्म के मुतअल्लिक़ वज़ाहत भी फरमा दी कि असल इल्म वह है जिसके ज़रिया इंसान अपने हकीकी खालिक व मालिक व राजिक को पहचाने जिसने एक नापाक कतरा से हज़रत इंसान को एक खुबसूरत शकल में पैदा फरमाया। गर्ज यह कि पहली वही से अल्लाह तआला ने इंसान को यह तालीम दी है कि इल्म का सबसे पहला और बुनियादी मक़सद मौलाए हकीकी को मान कर रब चाही ज़िन्दगी गुज़ारना है।

इसी तरह ''नून वल कलम वमा यसतुरून'' (सूरह कलम) में अल्लाह तआला ने कलम की कसम खा कर लिखने पढ़ने की खास अहमियत को रहती दुनिया तक वाज़ेह कर दिया। ''वल कलम'' में कलम से मुराद तकदीर का कलम है और ''वमा यसतुरून'' से वह फैसले मुराद हैं जो फरशिते लिखते हैं। मालूम हुआ कि असल इल्म वह है जो तकदीर पर ईमान की तालीम देता हो और ज़ाहिर है कि क़ुरान व

हदीस और इन दोनों से माखुज उलूम में ही तकदीर पर ईमान लाने की तालीमात मिलती हैं।

सूरह जमर आयत 9 में अल्लाह तआला फरमाता है ''क्या अहले इल्म और न जानने वाले बराबर हो सकते हैं? मज़कूरा आयत के इब्तिदाई हिस्सा और उससे कबल आयत में अल्लाह तआला ने फरमाया कि क्या काफिर उस मोमिन के बराबर हो सकता है जो की घड़ियों में इबादत करता है और आखिरत की ज़िन्दगी को सामने रख कर यह दुनियावी व फानी ज़िन्दगी गुज़ारता है। इसके बाद आने वाली आयत में अल्लाह तआला ने फरमाया ''ऐ मेरे ईमान वाले बन्दो! अपने रब से डरो।" मालूम हुआ कि जानने वाले की न जानने वाले पर फज़ीलत उस वक़्त होगी जब कि जानने वाला अल्लाह को मान कर ज़िन्दगी गुज़ारने वाला बने।

अल्लाह तआला का फरमान है ''तुम में से जो लोग ईमान लाए हैं और जिनको अल्म अता किया गया है अल्लाह के दरजों को बुलंद करेगा।" (सूरह मुजादिला 11) मालूम हुआ कि इल्म इसी सूरत में बाइसे इज़्ज़त व रफत है जब कि जानने वाला ईमान की अज़ीम दौलत से माला माल हो।

अल्लाह तआला अपने हबीब हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुखातब करते हुए फरमाता है ''ऐ पैगम्बर! जब क़ुरान वही के ज़रिया नाज़िल हो रहा हो तो उसके मुकम्मल होने से पहले जल्दी न किया करो और यह दुआ करते रहा करो कि ''ऐ मेरे परवादिगार! मेरे इल्म में तरक्की अता फरमा।" (सूरह ताहा 114) इस आयत से जहां यह मालूम हुआ कि इल्म एक ऐसा समुन्दर है जिसका कोई किनारा नहीं और इंसान को हर वक़्त इल्म में तरक्की

की कोशिश करते रहना चाहिए खाह वह इल्म की बुलंदियों पर पहुंच जाए, वहीं यह रहनुमाई भी मिली कि क़ुरान व हदीस और इन दोनों से माखुज इल्म ही असल इल्म है।

इल्म की अहमियत के साथ अल्लाह तआला ने उलमाए किराम के मुतअल्लिक़ यह इलान फरमा दिया ''अल्लाह से उसके बन्दों में से वही लोग डरते हैं जो इल्म रखते हैं।" (सूरह फातिर 28) इब्तिदा-ए-इस्लाम से अब तक जितनी भी मशहूर व मारूफ तफसीरें लिखी गई हैं उनमें लिखा है कि इस मज़कूरा आयत में उलमा से मुराद वह उलमा हैं जो अल्लाह के कलाम को पढ़ते पढ़ाते हैं, अल्लाह की जात व सिफात का इल्म रखते हैं, अल्लाह की मखलूकात में गौर व फिक्र करके अल्लाह तआला की अजमत, किबरीयाई व बड़ाई का एतेराफ करते हैं और जात बारी से खौफ व खशीयत रखते हैं। मालूम हुआ कि इसी इल्म से दोनों जहां में बुलंद व आला मक़ाम मिलेगा जिसके ज़रिया अल्लाह का खौफ पैदा और ज़ाहिर है कि यह कैफियत क़ुरान व हदीस और इन दोनों उलूम से माखुज इल्म से ही पैदा होती है।

जिस तरह बारी तआला ने इल्म और उलमा की खास फज़ीलत अपने पाक कलाम में ज़िक्र फरमाई है, रहमतुल लिल आलिमीन हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी इल्म की खास अहमियत व फज़ीलत को बार बार ज़िक्र फरमाया है मैं सिर्फ एक हदीस पेश कर रहा हुं। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स तलबे इल्म की राह में चलता है अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत का रास्ता आसान कर देता है और जो लोग जब कभी किसी खाना खुदा में जमा हो कर किताबुल्लाह की तिलावत करें और उसके दरस व तदरीस में मशगूल हों तो उनपर अल्लाह की रहमत

नाज़िल होती है और फरिश्ते उन्हें घेर लेते हैं और अल्लाह तआला अपने पास वालां में उनका ज़िक्र करता है। (सही मुस्लिम) हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने इस मुख्तसर मगर जामे कलाम में फरमाया कि इल्म उसी वक़्त काबिले कदर व बाइसे रहमत होगा जबकि वह जानने वाले को जन्नत तक पहुंचाने वाला हो। उसके बाद कुरानी हल्कों का ज़िक्र फरमा कर हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वाज़ेह तौर पर फरमा दिया कि असल इल्म वह है जो कुरानी तालीमात पर मुशतमिल हो।

ख्वातीन हज़रात!

इंसान तीन जराये में से किसी एक ज़रिया से इल्म हासिल करता हे, एक इंसान के हवास यानी आंख, कान, मुंह और हाथ पांव, दूसरा ज़रिया अकल और तीसरा ज़रिया वही है। इंसान को बहुत सी बातें अपने हवास के ज़रिया मालूम होती है, जबकि बहुत सी अकल के ज़रिया और जो बातें उन दोनों जराये से मालूम नहीं हो सकतीं उनका इल्म वही के ज़रिया अता होता है। हवास और अकल के ज़रिया हासिल शुदा इल्म में गलती के इमकान होते हैं लेकिन वही के ज़रिया हासिल शुदा इल्म में गलती के इमकान बिल्कुल नहीं होते, क्योंकि यह इल्म खालिक़े कायनात की जानिब से अम्बिया के ज़रिया इंसानों को पहुंचता है। गर्ज वही इलाही इंसान के लिए वह आला तरीन ज़रिया इल्म है जो उसे उसकी ज़िन्दगी से मुतअल्लिक़ उन सवालात के जवाब मुहैया करता है जो अकल व हवास के ज़रिया हल नहीं हो सकते यानी सिर्फ अकल और मुशाहिदा इंसान की रहनुमाई के लिए काफी नहीं है बल्कि उसकी हिदायत के लिए वही इलाही एक नागुज़ीर ज़रूरत है। चूंकि वही अकल और मुशाहिदे से

बढ़ कर इल्म है लिहाज़ा ज़रूरी नहीं कि वही की हर बात का इदराक अकल से हो सके। इस्लाम ने पहले दोनों जराये से हासिल होने वाले इल्म के हुसूल से मना नहीं किया है बल्कि इन उलूम को भी हासिल करने की तर्गीब दी है मगर इन दोनों जराये से हासिल होने वाले इल्म यक़ीनी नहीं बल्कि इसमें गलतियों के इमकानात होते हैं जबकि वही यानी क़ुरान व हदीस का इल्म यक़ीनी है।

हमारा यह ईमान है कि उलूमे क़ुरान व सुन्नत सबसे आला इल्म हैं लेकिन हमें हवास खमसा और अकल के ज़रिया भी इल्म हासिल करने की हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिए, तारीख इस बात की शाहिद है कि मुलसमानों ने हर दौर में तालीम के हर मैदान में अपना प्रचम बुलंद रखा है, इसके हर गोशे को अपनी नाकाबिले फरामोश खिदमात मुनव्वर किया है। मगर अफसोस की बात है कि असर हाज़िर में मुलसमानों की बड़ी तादाद ने क़ुरान व हदीस की तालीम को छोड़ दिया और हवासे खमसा व अकल के ज़रिया हासिल होने वाले उलूम में भी पीछे रह गए, चुनांचे ज़रूरत इस बात की है कि हम अपना खोया हुआ वकार दोबारा हासिल करें जिसके लिए हमें अपना रिश्ता क़ुरान व हदीस से मज़बूती के साथ जोड़ कर दूसरे उलूम में भी सबकत हासिल करनी होगी।

मदारिस का क़याम

आईए सबसे पहले उन मसाजिद व मदारिस, दीनी एदारों व खानकाहों व तरबियत गाहों और कज़ा व फतवा की खिदमात हासिल करने वाले एदारों की बात करते हैं जो अपनी दीनी खिदमात में मसरूफ हैं और मिल्लते इस्लामिया की रहबरी व रहनुमाई का

फरीजा बहुसन व खुबी अंजाम दे रहे हैं। मदारिस के क़याम की इब्तिदा चौथी सदी हिजरी के आखिर से मंसूब की जाती है, लेकिन हक़ीक़त यह है कि मुलसमानों में दीनी तालीम के एहतेमाम का सिलसिला अहदे नबवी ही में शुरू हो चुका था। दारे अरकम, दरसगाह मस्जिदे कुबा, मस्जिदे नबवी और असहाबे सुफ्फा के चबूतरा में तालीम व तरबियत की मसरूफियात उसके वाज़ेह सबूत हैं। चौथी व पांचवीं सदी हिजरी की मारूफ दीनी दरसगाहों में मिश्र का जामे अजहर, असफहान का मदरसा अबू बकर अल असफहानी, नीशापुर का मदरसा अबुल इसहाक अल असफर ऐयनी और बगदाद का मदरसा निजामिया शामिल हैं। गरज़ ये कि मदारिस की तारीख व तासीस की कड़ी अहदे रिसालत से जा कर मिलती है और मदारिस में पढ़ाई जाने वाली हदीस की किताबों की सनद का सिलसिला हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुंचता है। जुनूबी हिन्द के साहिली इलाकों (मालाबार) में अरब ताजिरों की नौ आबादियात में मसाजिद का क़याम व दीनी तालिम के एहतेमाम का सिलसिला सातवीं सदी हिजरी ईसवी में शुरू हो चुका था लेकिन बर्रे सगीर में मदारिस का क़याम दूसरी सदी हिजरी यानी आठवीं सदी ईसवी में हुआ। जहां तक शिमाली हिन्द में मदारिस के दाग बैल पड़ने का तअल्लुक़ है तो उसकी इब्तिदा तुर्क की फतुहात के ज़माना में हो गई थी मगर 1206 ईसवी में जब दिल्ली में मुस्लिम हुकुमत क़ायम हुई तो दिल्ली के अलावा दूसरे शहरों व कसबों व देहातों में कसीर तादाद में मकातिब व मदारिस क़ायम हुए।

मदारिस के क़याम का मक़सद

मदारिस के क़याम का बुनियादी मक़सद किताब व सुन्नत और उनसे माखूज उलूम व फनून की तालीम व तअल्लुम, तौजीह व तशरीह, तामिल व इत्तिबा, तबलीग व दावत के साथ ऐसे रिजाल कार पैदा करना है जो इस तसलसुल को क़ायम व जारी रख सकें, नीज़ इंसानों की दुनियावी ज़िन्दगी की रहनुमाई के साथ ऐसी कोशिश करना है कि हर हर इंसान जहन्नम से बच कर जन्नत में जाने वाला बन जाए।

मदारिस में क्या पढ़ाया जाता है?

अब आईए एक नज़र इसपर भी डालें कि मदारिस में किया पढ़ाया जाता है। मदारिस में यह उलूम पढ़ाए जाते हैं, इल्मे तज्वीद, इल्मे तफसीर, इल्मे उसूल तफसीर, इल्मे हदीस, इल्मे असूले हदीस, इल्मे फिकह, इल्मे असूले फिकह, इल्मे मीरास, इल्के अकायद, इल्मे नहव, इल्मे सर्फ, इल्मे मंतिक, इल्मे बलागत और ज़माना की ज़रूरत के मुताबिक़ बाज़ दूसरे उलूम।

मदारिस के निसाब में तब्दीली

वक़्तन फवक़्तन मदारिस के निसाब में तब्दीली की बात उठती रहती है, इसपर गौर व खौज करने के बाद मालूम हुआ कि मदारिस में निसाब की तब्दीली के लिए आम तौर पर तीन मौक़िफ हैं

एक मौक़िफ उन हज़रात का है जो इस निसाब को मौज़ूदा ज़माने में बेकार समझते हैं, ऐसे लोगों का ख्याल है कि मदारिस के निसाब में बड़े पैमाने पर तब्दीली करने की ज़रूरत है जिसमें असरी उलूम इस

हद तक शामिल किए जाऐं कि मदारिस के फुजला कालेज और यूनिवर्सिटियों के फारेगीन के साथ क़दम से क़दम मिला कर दुनियावी ज़िन्दगी में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश में लग जाऐं। यह अमूमन वह हज़रात हैं जिन्होंने मदारिस में न तो तालीम हासिल की है और न ही मदारिस के निसाब से बखुबी वाकिफ हैं। हैरत की बात है कि यह हज़रात एक या दो फीसद तलबा जो मजहबी तालीम हासिल कर रहे हैं उनकी दुनियावी तालीम की तो फिक्र कर रहे हैं मगर 98 या 99 फीसद बच्चे जो असरी तालीम के शुबों में हैं उनकी दीनी तालीम व तरबियत की कोई फिक्र नहीं करते।

एक तबका वह हैं जो इस निसाब में अदना सी तब्दीली भी गवारा नहीं करना चाहता बल्कि जो लोग तब्दिलीयों का मशविरा देते हैं उनकी राय पर तवज्जह भी देने के लिए तैयार नहीं है।

जहिर है कि यह दोनों ही नुकता-ए-नज़र गलत हैं, पहला इसलिए कि मदारिस की तालीम का बुनियादी मक़सद उलूमे क़ुरान व सुन्नत की तरवीज, इशाअत और हिफाज़त है, नीज़ उम्मते मोहम्मदीया की दुनियावी ज़िन्दगी में रहनुमाई के साथ इस बात की कोशिश व फिक्र करना है कि उम्मते मोहम्मदीया का हर हर फर्द उखरवी ज़िन्दगी में कामयाबी हासिल करे। उखरवी ज़िन्दगी को नज़र अंदाज़ करके डाक्टर या इंजीनियर या डिजाईनर बनाना मदारिस के क़याम का मक़सद नहीं। जिस तरह दुनियावी तालीम में भी इंजीनियरिंग करने वाले तालिबे इल्म को मेडिकल की तालीम नहीं दी जाती, वकालत की तालीम हासिल करने वाले तालिबे इल्म को नक्शा नहीं सिखाया जाता क्योंकि मैदान मुख्तलिफ हैं, इसी तरह क़ुरान व हदीस की

तालीम में तख्सस्सूस करने वाले तालिबे इल्म को अंग्रेजी व हिसाब व साइंस वगैरह के सब्जेक्ट जिमनन ही पढ़ाए जा सकते हैं। दूसरा तबका भी गलत सोच रखता है क्योंकि मदारिस के बुनियादी मक़सद (क़ुरान व हदीस की तालीम) पर क़ायम रहते हुए ज़माना की ज़रूरत और उसके तकाजों के मुताबिक़ बाज़ उलूम का हजफ व इजाफा किया जाना चाहिए।

इन दोनों नुक्ता-ए-नज़र के दरमियान एक मुतदिल नज़रया भी है कि मदारिस इस्लामिया को मौज़ूदा रायज निज़ाम के तिहत ही चलना चाहिए, यानी उलूम क़ुरान व सुन्नत को ही बुनियादी तौर पर पढ़ाया जाए और ज़ाहिर है कि क़ुरान हदीस को तब्दील नहीं किया जा सकता, लिहाज़ा क़ुरान व हदीस की वही किताबें पढ़ाई जाऐं जिनके तालीम व तअल्लुम का सिलसिला सैकड़ों सालों से जारी है मगर तफसीर क़ुरान, शरह हदीस और फिकह वगैरह पर कुछ किताबें दौरे हाज़िर के असलूब में अजसिरे नौ मरत्तब करके शामिल की जाऐं, नीज़ नहव व सर्फ व अरबी अदब व बलागत पर आसान व मुख्तसर किताबं लिखी जाऐं, मंतिक और फलसफा जैसे उलूम की बाज़ किताबों को हजफ करके अंग्रेजी, हिसाब और कम्प्यूटर जैसे जदीद उलूम पर मुशतमिल कुछ किताबें निसाब में शामिल की जाऐं। गरज़ ये कि उलूमे किताब व सुन्नत की बाला दस्ती को क़ायम रखते हुए तकाजा-ए-वक़्त के मुनासिब बाज़ उलूम वफनून का इजाफा कर लिया जाए लेकिन मदारिस के निसाब में इस किसम की तब्दीली न की जाए कि असल मक़सद ही फौत हो जाए जैसा कि शायर मश्रिक अल्लामा इकबाल ने फरमाया इन मक्तबों को इसी हाल में रहने दो, गरीब मुलसमानों के बच्चे को इन्हीं मदारिस में पढ़ने दो, अगर यह

मुल्ला और दरवेश न रहे तो जानते हो क्या होगा? जो कुछ होगा मैं उन्हें अपनी आंखों से देख आया हुं अगर हिन्दुस्तानी मुसलमान इन मदरसों के असर से महरूम हो गए तो बिल्कुल इस तरह होगा जिस तरह उंदुलूस में मुलसमानों की आठ सौ बरस की हुकुमत के बावज़ूद आज गरनाता और कुर्तबा के खंडरात और अलहमरा के निशानात के सिवा इस्लाम के पैरूओं और इस्लामी तहजीब के आसार का कोई नक्श नहीं मिलता, हिन्दुस्तान में भी आगरा के ताज महल और दिल्ली के लाल किला के सिवा मुलसमानों की आठ सौ साला हुकुमत और उनकी तहजीब का कोई निशान नहीं मिलेगा। (माहनामा दरूल उलूम दिसम्बर 94 बहवाला दीनी मदारिस)

इसी तरह मशहूर व मारूफ आलिमे दीन अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी ने फरमाया हमको यह साफ कहना है कि अरबी मदरसों की जितनी ज़रूरत आज है, कल जब हिन्दुस्तान की दूसरी शकल होगी उससे बढ़ कर उनकी ज़रूरत होगी, वह हिन्दुस्तान में इस्लाम की बुनियाद और मरकज होंगे, लोग आज कल अहदों और मुलाज़िमतों के फेर और अरबाब इक़्तिदार की चापलोसी में लगे होंगे और यही दीवाने मुल्ला आज की तरह कल भी होशियार होंगे। इसलिए यह मदरसे जहां भी हों जैसे भी हों उनको संभालना और चलाना मुलसमानों का सबसे बड़ा फर्ज़ है। (महनामा फिक्र वउली उल्लाह मार्च 2003)।

मदारिस की चंद अहम खिदमात

मदारिसे इस्लामिया की दरजनों खिदमात हैं यहां सिर्फ एक दरजन खिमात पेश हैं-

1) क़ुरान व हदीस की खिदमत में मदारिस ने जो किरदार अदा किया वह तारीख का एक नाकाबिले फरामोश हिस्सा है, बर्रे सगीर में क़ुरान व हदीस की मुख्तलिफ तरीकों से बिलवास्ता या बिला वास्ता खिदमत अंजाम देने में उन्हें मदारिस इस्लामिया का रोल है और यह वह शर्फ है जो किसी और इदारा को नसीब नहीं हुआ, अगर यह कहा जाए कि बर्रे सगीर में मदारिस इस्लामिया के वज़ूद के बेगैर उलूम क़ुरान व हदीस का फरूग नामुमकिन था तो बिल्कुल मुबालगा न होगा।

2) इन्हीं मदारिस के फारेगीन में वह लोग भी हैं, जिन्होंने अपनी दूर अंदेशी और बालिग नजरी का सबूत देते हुए मुलसमानों की असरी तालीम के लिए स्कूल, कालेज और यूनिवर्सीटी की बुनियाद रखी, चुनांचे जामिआ मिल्लीया इस्लामिया की बुनियाद ‘‘शैखुल हिन्द” मौलाना महमूदुल हसन ने ही रखी थी, मौलाना मोहम्मद अली जौहर ने इस एदारा की नशु व नुमा में अहम रोल अदा किया। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सीटी के लिए अल्लामा शिब्ली नुमानी की अज़ीम खिदमात को तारीख नज़र अंदाज़ नहीं कर सकती। उनके अलावा और भी बहुत से उलमा हैं जिन्होंने न सिर्फ मुलसमानों की दीनी तालीम की तरफ तवज्जह दी बल्कि उनको असरी तालीम से भी आरास्ता करने के लिए गैर सरकारी स्कूलों और कालेजों को क़ायम किया। असरे हाज़िर में मुफक्किर मिल्लत मौलाना मोहम्मद वली रहमानी दामत बरकातुहूम ने ’’रहमानी 30’’ के नाम से एक एदारा क़ायम किया है, यह एदारा रोज अव्वल से ही अपने अजायम व मकासिद की तरफ कामयाबी के साथ रवां दवां है चूनांचे बेशुमार तलबा इस एदारा से इस्तिफादा करके अपने मुल्क और कौम का

नाम रौशन कर रहे हैं। इसी तरह मौलाना गुलाम मोहम्मद वस्तावनी साहब की खिदमात तालीम से अदना सी वाक़फियत रखने वाले शख्स से भी छुपी हुई नहीं हैं।

3) मदारिस का एक खास इमतियाज यह है कि उसने अपना फैज पहुंचाने में किसी खास तबका या किसी खास जमाअत को दूसरे तबका या जमाअत पर फौकियत नहीं दी बल्कि उसने अपने दरवाजे अमीर और गरीब सबके लिए यकसां तौर पर खुले रखे, इतना ही नहीं बल्कि गरीबों में तालीम को आम करने में सबसे बड़ा किरदार मदारिस ही का है, चुनांचे अगर सर्वे किया जाए तो यही नतीजा निकलेगा कि आज स्कूलों की बनिसबत मदारिस में गरीब तलबा की तादाद बहुत ज़्यादा है।

4) देहात के इलाकों में तालीम व तअल्लुम का नज्म जितना मदारिस ने किया है इतना किसी दूसरे सरकारी या गैर सरकारी एदारों ने नहीं किया, मदारिस के फारेगीन ने इस्लामी तालीम को आम करने, मुलसमानों से जिहालत को दूर करने और मुस्लिम घरानों को इल्म की रौशनी से मुनव्वर करने के लिए न सिर्फ बड़े शहरों या कसबों पर तवज्जह दी है बल्कि गाओं और देहातों का भी रूख किया है ताकि कोई भी गोशा इल्म दीन से खाली न रह जाए। इतना ही नहीं बल्कि बंगाल और यूपी के बाज़ इलाकों में मदारिस में गैर मुस्लिम बच्चे भी तालीम हासिल कर रहे हैं।

5) उर्दू ज़बान की तरवीज व इशाअत में मदारिस ने भरपूर हिस्सा ले कर उर्दू ज़बान की खामोश खिदमत की है और आज भी यह सिलसिला जारी है। मदारिस और मकातिब की तादाद लाखों में है और उनका ज़रिया तालीम उर्दू है। इस्लामियात का बड़ा सरमाया उर्दू

ज़बान में है बल्कि उर्दू ज़बान में सबसे ज़्यादा किताबें इस्लामियात की ही हैं।

6) हिन्दुस्तान की आज़ादी के हवाले से देखा जाए तो उसमें भी मदरसों का एक अहम किरदार सामने आता है, चुनांचे हिन्दुस्तान को आजाद कराने में जिन मुलसमानों ने नुमायां किरदार अदा किया है उनमें से एक बड़ी तादाद मदारिस के फुजला की थी।

7) बड़े बड़े शहरों और कसबों में मदारिस के जेरे इंतिज़ाम दारूल कज़ा और दारूल इफता क़ायम किए गए हैं जहां मुलसमानों के आयली मसाइल क़ुरान व सुन्नत की रौशनी में हल किए जाते हैं। दारूल इफता का सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि लाखों लोग अदालतों और कोर्ट कचहरियों का चक्कर लगाने से बच गए। इसी के साथ दूसरा अहम फायदा असहाब मामला को यह हुआ कि किसी मुआवजा के बेगैर दारूल इफता के ज़रिया उनके मसाइल जल्द हल हो गए।

8) हर कौम की एक तहजीब होती है और यह तहजीब ही उस कौम की पहचान और उसके वज़ूद का सबब होती है। मदारिस इस्लामिया ने मुलसमानों को इस्लामी तहजीब व तमद्दुन पर क़ायम रहने की न सिर्फ तल्कीन की है बल्कि अमल करके उसको महफूज़ रखने में अहम किरदाद अदा किया है। आज आलमी सतह पर दुशमनाने इस्लाम का मक़सद है कि इस्लामी तहजीब को खत्म करके मुलसमानों पर अपनी तहजीब थोप दें। मदारिस इस्लामिया और उलमाए किराम उनके मकासिद की तकमील में रुकावट बने हुए हैं, लिहाज़ा दुशमनाने इस्लाम मदारिस को बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन फुंकों से यह चिराग बुझाया न जाएगा।

9) दुनिया के अतराफ व अकनाफ में मुलसमानों की फलाह व बबहुद के लिए मुख्तलिफ नामों से चलने वाली जमाअतों और तंजीमों में भी मदारिस का अहम रोल है। आज मुलसमानों की सियासी, समाजी और तालिमी सतह पर खिदमत अंजाम देने वाली तंजीमों की सरप्रस्ती ज़्यादा तर फुजला मदारिस ही कर रहे हैं।

10) तालीम के साथ साथ नौजवान तलबा की तरबियत और उनक इस्लाह में मदारिस का रोल अहम है, चुनांचे मदारिस में फजर के वक़्त जागने से लेकर ईशा के बाद सोने तक सभी तलबा के खाने पीने, पढ़ने लिखने, खेलने कूदने और दूसरी ज़रूरी कामों की पाबन्दी निहायत मुनज्जम तरीक़ा से कराई जाती है। शरीअत की तालीमात के मुताबिक़ उनकी तरबियत और जेहन साजी की जाती है और उनको मुआशरत के उसूल व आदाब भी बताए जाते हैं ताकि मदरसा से फारिग होने के बाद घर और समाज में एक बावक़ार और मिसाली ज़िन्दगी गुज़ार सकें।

11) मदारिस में जो कुछ पढ़ाया जाता है वह इस कदर जामे होता है कि इसको मजीद समझने के लिए तलबा को अलग से टूयुशन की ज़रूरत पेश नहीं आती और अगर दरस के दौरान कोई मसअला समझ में नहीं आता तो तलबा बाद में भी किसी मुआवजा के उस्ताज़ से रुजू कर लेते हैं।

12) बर्रे सगीर में क़ायम मदारिस व मकातिब में लाखों की तादाद में लोग रोजगार से जुड़े हुए हैं और वह कम तंख्वाह के बावज़ूद किनाअत करते हैं। गरज़ ये कि उलमाए किराम ने मसाजिद व मदारिस व माकतिब के ज़रिया बच्चा की विलादत के वक़्त कान में अज़ान देने से लेकर नमाज़े जनाजा पढ़ाने तक उम्मते मुस्लिमा की

दीनी व तालिमी व समाजी रहनुमाई के लिए ऐसी खिदमात पेश की हैं कि एक मुसलमान भी ऐसा नहीं मिल सकता जो उन खिदमात से मुस्तफीज न हुआ हो।

असरी दरसगाहों में दीनी तालीम व तरबियत की ज़िम्मेदारी

जैसा कि ज़िक्र किया कि इस्लाम ने असरी उलूम को हासिल करने से मना नहीं किया है मगर यह हक़ीक़त है कि आज जो तलबा असरी दरसगाहों से पढ़कर निकलते हैं उनमें एक बड़ी तादाद दीन से बेबहरा लोगों की होती है और एक काबिल लिहाज तादाद तो दीन से बेजार लोगों की होती है। उसकी ज़िम्मेदारी उलमाए किराम पर भी आयद होती है। यह हक़ीक़त है कि आज भी मुस्लिम समाज पर उलमा की जो गिरफ्त है उसकी कोई मिसाल नहीं मिलती, मसाजिद का निज़ाम उलमा के हाथ में है, मदारिस की बहार उनही के दम से क़ायम है, बहुत सी दीनी जमाअतों और तंजीमों में वह किबला नुमा दरजा रखते हैं लेकिन मार्डन एजूकेशन और टेकनिकल तालीम की तरफ उन्होंने खातिर खाह तवज्जह नहीं की है। लिहाज़ा उलमाए किराम की ज़िम्मेदारी है कि वह खुद आगे बढ़ कर असरी तालीम व तरबियत का नज्म किया जाए ताकि दीनदार डाक्टर, दीनदार इंजिनीयर, दीनदार वकील बन कर मुख्तलिफ शुबों में इस्लामी फिक्र व अमल की तरजुमानी करें। मुस्लमानां के जेर एहतेमाम यूनिवर्सिटियों, कालेजों और स्कूलों के जिम्मेदारों से दरख्वास्त है कि दीनी तालीम व तरबियत को सिर्फ नाम के लिए न रखा जाए कि न असातज़ा उसे अहमियत दें और न तलबा व तालिबात, बल्कि शरई ज़िम्मेदारी समझ कर उनकी दीनी तालीम व तरबियत पर खास

तवज्जह दी जाए। बच्चों के वालिदैन और सरपरस्तों की भी ज़िम्मेदारी है कि स्कूलों व कालेजों का इंतिखाब ईमान व अकीदे की हिफाज़त की फिक्र के साथ करें।

दुआ मोमिन का अज़ीम हथयार है

दुआ की हक़ीक़त

दुआ के लूगवी मानी हैं पुकारना और बुलाना, शरीअत की इस्तिलाह में अल्लाह तआला के हुज़ूर इल्तिजा और दरख्वास्त करने को दुआ कहते हैं। इंसान की फितरत में है कि वह मुश्किलात और परेशानियों में अल्लाह तआला को पुकारता है जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है "जब इंसान को तकलिफ पहुंचती है तो अपने रब को पुकारता है और दिल से उसकी तरफ रुजू करता है।" (सूरह जमरा 8) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ को इबादत की रूह क़रार दिया है, यानी दुआ इबदात की रूह और उसका मगज़ है (तिर्मिज़ी) नीज़ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया दुआ इबादत है। (तिर्मिज़ी)

अल्लाह तआला ने अम्बिया-ए-किराम व सालिहीन की दुआओं का ज़िक्र अपने पाक कलाम (क़ुरान करीम) में बहुत सी जगहों पर फरमाया है।

दुआ की ज़रूरत

हर शख्स मोहताज है और ज़मीन व आसमान के सारे खजाने अल्लाह तआला ही के कब्जा में है, वही साइलों को अता करता है, इरशादे बारी है "अल्लाह बेनियाज है और तुम सब मोहताज हो" (सूरह मोहम्मद 38) इंसान की मुहताजी और फकीरी का तकाजा यही है कि बन्दा अपने मौला से अपनी हाजत व ज़रूरत को मांगे और

अपने किसी भी अमल के ज़रिया अल्लाह से बेनियाजी का शाइबा भी न होने दे क्योंकि यह मकामे अब्दियत और दुआ के मुनाफी है।

दुआ की अहमियत

दुआ की अहमियत के लिए सिर्फ यही काफी है कि अल्लाह तआला ने सूरह फातिहा में अपने बन्दों को न सिर्फ दुआ मांगने की तालीम दी है बल्कि दुआ मांगने का तरीक़ा भी बताया है। नीज़ इरशाद बारी है ''(ऐ पैगम्बर) जब आपसे मेरे बन्दे मेरे मुतअल्लिक़ पूछा करें तो (फरमा दीजिए कि) मैं क़रीब ही हुं, जब कोई मुझे पुकारता है तो मैं पुकारने वाले की पुकार सुनता हुं।" (सूरह बक़रह 186) गरज़ ये कि दुआ क़बूल करने वाला खुद जमानत दे रहा है कि दुआ क़बूल की जाती है, इससे बढ़ कर दुआ की अहमियत किया हो सकती है। नीज़ अल्लाह तआला ने बन्दों को हुकुम देते हुए फरमाया ''तुम्हारे परवरदिगार ने कहा कि तुम मुझसे दुआ करो, मैं तुम्हारी दुआ क़बूल करूंगा।" (सूरह मोमिन 60)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी सिर्फ अल्लाह तआला से दुआ करने की तर्गीब दी है, बल्कि उसके फज़ाइल और आदाब भी बयान फरमाए हैं, चुनांचे हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ''अल्लाह के यहां दुआ से ज़्यादा कोई अमल अज़ीज़ नहीं है।" (इनबे माजा) यानी इंसानों के आमाल में दुआ ही को अल्लाह तआला की रहमत व इनायत को खींचने की सबसे ज़्यादा ताकत है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुममें से जिसके लिए दुआ का दरवाजा खुल गया उसके लिए रहमत के दरवाजे खुल गए और अल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब यह है कि बन्दा उससे आफियत की दुआ करे।"(तिर्मिज़ी)

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ को मोमिन का खास हथयार यानी उसकी ताकत बताया है। दुआ को हथयार से तशबीह देने की खास हिकमत यही हो सकती है कि जिस तरह हथयार दुशमन के हमला वगैरह से बचाओ का ज़रिया है इसी तरह दुआ भी आफात से हिफाज़त का ज़रिया है।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि तुम्हारे परवरदिगार में बदरजा गायत हया और करम की सिफत है, जब बन्दा उसके आगे मांगने के लिए हाथ फैलाता है तो उसको हया (शर्म) आती है कि उनको खाली हाथ वापस कर दे, यानी कुछ न कुछ अता फरमाने का फैसला ज़रूर फरमाता है। (सुनन अबू दाउद) हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इरशाद दरहक़ीक़त साइल के लिए उम्मीद की किरन है कि अल्लाह तआला ऐसा करीम है जो मांगने वालों को कभी महरूम नहीं करता और बन्दा की मसलेहत के मुताबिक ज़रूर अता करता है।

क़ुरान व हदीस से जहां दुआ की अहमियत व फज़ीलत और पसंदीदगी मालूम होती है, वहीं अहादीस में दुआ न करने पर अल्लाह तआला की नाराज़गी की भी वईद आई है, चुनांचे हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो बन्दा अल्लाह तआला से न मांगे

उस पर अल्लाह तआला नाराज होता है। (तिर्मिज़ी) दुनिया में ऐसा कोई नहीं है जो सवाल न करने से नाराज होता हो हत्ताकि वालिदैन भी औलाद के हर वक़्त मांगने और सवाल करने से चिढ़ जाते हैं मगर अल्लाह तआला इतना मेहरबान है कि जो बन्दा उससे न मांगे वह उससे नाराज होता है क्योंकि अल्लाह तआला से दुआ न करना तकब्बुर की अलामत है और मांगने पर उसे प्यार आता है।

दुआ के चंद अहम आदाब

दुआ चूंकि एक अहम इबादत है इसलिए इसके आदाब भी काबिले लिहाज हैं। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ के बारे में कुछ हिदायत दी हैं, दुआ करने वाले के लिए ज़रूरी है कि उनका ख्याल रखे। अहादीस में दुआ के लिए दर्ज जैल आदाब की तालीम फरमाई गई है जिनको मलहुज रख कर दुआ करना बिलाशुबहा कबूलियत की अलामत है लेकिन अगर कोई शख्स किसी वक़्त बाज़ आदाब को जमा न कर सके तो ऐसा न करे कि दुआ ही को छोड़ दे, दुआ इंशाअल्लाह हर हाल में मुफीद है। आदाबे दुआ में बाज़ को रूकन या शर्त या वाजिब का दरजा हासिल है जबकि कुछ चीजें मुस्तहबात दुआ के जुमरा में आती हैं और कुछ चीजें वह हैं जिन से दुआ के मौक़ा पर मना किया गया हैं, जो मुंहियात व मकरूहात कहलाती हैं जो हसबे जैल हैं

दुआ के चंद अहम अरकान, शरायत और वाजिबात

1) अल्लाह तआला से इखलास के साथ दुआ करना यानी यह यक़ीन हो कि अल्लाह तआला ही हमारी ज़रूरतों को पूरी करने वाला है,

इरशाद बारी है ''तुम लोग अल्लाह को खालिस इतिकाद करके पुकारो।'' (सूरह मोमिन 14)

2) दुआ के क़बूल होने की पूरी उम्मीद रखना और यह यक़ीन रखना कि अल्लाह तआला ने क़बूल करने का वादा किया है वह बिला शुबहा क़बूल करेगा, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ''अल्लाह से इस तरह दुआ करो कि तुम्हें कबूलियत का यक़ीन हो।'' (तिर्मिज़ी)

3) दुआ के वक़्त दिल को अल्लाह तआला की तरफ हाज़िर और मुतवज्जह रखना क्योंकि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ''बेशक अल्लाह तआला उस बन्दा की दुआ क़बूल नहीं करता जो सिर्फ ऊपरी दिल से और तवज्जह के बेगैर दुआ करता है।'' (तिर्मिज़ी) गरज़ ये कि दुआ के वक़्त जिस कदर मुमकिन हो हुज़ूर कल्ब की कोशिश करे और खुशू व खुज़ू और सुकून कल्ब के साथ अल्लाह तआला की तरफ मुतवज्जह हो।

4) दुआ करने वाले की गिजा और लिबास हलाल कमाई से होना। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो शख्स दूर दराज का सफर करे और निहायत परेशानी व प्रागंदगी के साथ हाथ उठा कर या रब या रब कहते हुए दुआ करे जबकि उसकी गिजा और लिबास सब हराम से हो और हराम कमाई ही इस्तेमाल करता हो तो उसकी दुआ कैसे क़बूल हो सकती है?(सही मुस्लिम)

5) दुआ के शुरू में अल्लाह तआला की हमद व सना करना और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजना। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुममें से जब कोई दुआ मांगे तो पहले अल्लाह तआला की बुर्जगी व सना से दुआ

का आगाज़ करे फिर मुझ पर दुरूद भेजे, फिर जो चाहे मांगे। (तिर्मिज़ी) हज़रत उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि दुआ आसमान व ज़मीन के दरमियान मुअल्लक रहती है यानी दरज-ए-कबूलियत को नहीं पहुंचती जब तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद न भेजे। (तिर्मिज़ी)

6) दुआ के वक़्त गुनाह का इक़रार करना, यानी पहले गुनाह से बाहर निकलना, उस पर निदामत करना और आईन्दा न करने का इरादा करना।

7) दुआ आहिस्ता और पस्त आवाज़ से करना यानी दुआ में आवाज़ बुलंद न करना। अल्लाह तआला का इरशाद है "तुम लोग अपने परवरदिगार से दुआ किया करो गिर गिरा कर और आहिस्ता।" (सूरह आराफ 55) (अलबत्ता इजतिमाई दुआ थोड़ी आवाज़ के साथ करें)

दुआ केक चंद अहम मुस्तहबात (वह उमूर जिनका दुआ के वक़्त एहतेमाम करना बेहतर है)

1) दुआ से पहले कोई नेक काम मसलन नमाज़, रोज़ा और सदका वगैरह का एहतेमाम करना।

2) किबला की तरफ रूख करके दो जानु हो कर बैठना और दोनों हाथों का मुढ़ों तक इस तरह उठाना कि हाथ मिले रहें और अंगूलियां भी मिली हों और किबला की तरफ मुतवज्जह हों।

3) अल्लाह तआला के असमा-ए-हुसना और सिफाते आलिया ज़िक्र करके दुआ करना।

4) इस बात की कोशिश करना कि दुआ दिल से निकले।

5) दुआ में अपने खालिक व मालिक के सामने गिड़गिड़ाना यानी रो रो कर दुआऐं मांगना या कम से कम रोने की सूरत बनाना।

6) दुआ को तीन तीन मरतबा मांगना।

7) दुआ के वह अल्फाज़ इख्तियार करना जो क़ुरान करीम में आए हैं या जो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मंकूल हैं क्योंकि जो दुआऐं क़ुरान करीम में आई हैं उनके अल्फाज़ खुद कबूलियत की दलील हैं और अहादीस में भी उनकी फज़ीलत मज़कूर है और जो दुआऐं हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान मुबारक से निकली हैं वह ज़रूर अल्लाह तआला को प्यारी होंगी।

8) तमाम छोटी और बड़ी हाजतें सब अल्लाह तआला ही से मांगना।

9) नमाज़ के बाद और बिलखुसूस फर्ज़ नमाज़ के बाद दुआ मांगना।

10) दुआ करने वाले के बाद आमीन कहना और आखिर में दोनों हाथ अपने चेहरा पर फेर लेना।

वह उमूर जिनका दुआ के वक़्त करना ममनू या मकरूह है

1) दुआ के वक़्त असबाब की तरफ नज़र न हो बल्कि असबाब व तदाबीर से कता तअल्लुक़ हो कर मुसब्बिबुल असबाब की जात पर यक़ीन रखना।

2) दुआ में हद से तजावुज करना गलत है यानी किसी ऐसे काम की दुआ न करना जो शरअन या आदतन महाल हो या जो बात पहले ही तैय हो चुकी हो मसलन यूं न कहे कि फ्ला मुर्दा को जिन्दा कर दे या औरत यह दुआ करे कि मुझे मर्द बना दे, ऐसी दुआ हरगिज नहीं करनी चाहिए।

3) दुआ में किसी किसम का तकल्लुफ या काफिया बन्दी न करे क्योंकि यह मामला हुज़ूरे कल्ब से बाज़ रखता है और अगर खुद बखुद बमुकतजा-ए-तबीअत काफिया बन्दी हो जाए तो मजाइका नहीं।
4) अपनी जान व माल और औलाद के लिए बद दुआ न करे मुमकिन है कि कबूलियत की घड़ी में यह बद दुआ निकले और बाद कबूलियत पशेमानी उठानी पड़े।
5) दुआ की अदम कबूलियत पर मायूस हो कर दुआ करना न छोड़ना बल्कि हत्तल इमकान पूर उम्मीद रहना और दुआ क़बूल हो या न हो अपने मालिक के रूबरू हाथ फैलाते रहना, अजब नहीं कि अल्लाह तआला को रहम आ जाए और दुआ क़बूल हो जाए।

क़बूलियते दुआ के बाज़ औक़ात व हालात

यू तो दुआ हर वक़्त क़बूल हो सकती है मगर कुछ औक़ात व हालात ऐसे हैं जिनमें दुआ के क़बूल होने की उम्मीद ज़्यादा है, इसलिए इन औक़ात व हालात को बरबाद नहीं करना चाहिए।
1) शबे क़दर यानी रमज़ानुल मुबारक के अखीर अशरा की रातें। (तिर्मिज़ी)
2) माहि रमज़ानुल मुबारक के तमाम दिन व रात और ईदुल फितर की रात।
3) अरफा का दिन (9 जिलहिज्जा को जवाले आफताब के बाद गुरूबे आफताब तक)। (तिर्मिज़ी)
4) मुज्दलफा में 10 जिलहिज्जा को फजर की नमाज़ पढ़ने के बाद से तुलू आफताब से पहले तक।
5) जुमा की रात और दिन। (तिर्मिज़ी, नसई)

6) आधी रात के बाद से सूबह सादिक तक।

7) जुमा के वक़्त- अहादीस में है कि जुमा के दिन एक घड़ी ऐसी आती है जिसमें दुआ की जाए क़बूल होती है। (बुखारी व मुस्लिम) मगर उस घड़ी की ताईन में रिवायत और उलमा के अक़वाल मुख्तलिफ हैं। रिवायत और अक़वाल सहाबा व ताबईन से दो वक्तों की तरजीह साबित है, पहला इमाम के खुतबा के लिए मिम्बर पर जाने से ले कर नमाज़े जुमा से फारिग होने तक (मुस्लिम) खास कर दोनों खुतबों के दरमियान का वक़्त। खुतबा के दरमियान ज़बान से दुआ नह करें अलबत्ता दिल में दुआ मांगें, इसी तरह खतीब खुतबा में जो दुआऐं करता है उपर भी दिल ही दिल में अमीन कह लें। कबूलियत दुआ का दूसरा वक़्त जुमा के दिन नमाज़े असर के बाद से गुरूबे आफताब तक है। (तिर्मिज़ी)

8) अज़ान व इक़ामत के दरमियान। (तिर्मिज़ी)

9) फर्ज़ नमाज़ के बाद। (नसई)

10) सज्दा की हालत में। (मुस्लिम)

11) तिलावते क़ुरान के बाद। (तिर्मिज़ी)

12) आबे जमजम पीने के बाद। (मुस्तदरक हाकिम)

13) जिहाद में ऐन लड़ाई के वक़्त (अबू दाउद)

14) मुलसमानों के इजतिमा के वक़्त। (सिहाये सित्ता)

15) बारिश के वक़्त। (अबू दाउद)

16) बैतुल्लाह पर पहली निगहा पड़ते वक़्त। (तिर्मिज़ी)

दुआ क़बूल होने के चंद अहम मुकामात

यू तो दुआ हर जगह क़बूल हो सकती है मगर कुछ मकामात ऐसे हैं जहां दुआ के क़बूल होने की उम्मीद ज़्यादा है।

1) तवाफ करते वक़्त।

2) मुलजिम पर चिमट कर। (मुल्तजिम उस जगह को कहते हैं जो हजरे असवद और बैतुल्लाह के दरवाजा के दरमियान है, मुल्तजिम अरबी में चिमटने की जगह को कहा जाता है, चूंकि इस जगह चिमट कर दुआ की जाती है इसलिए इसको मुल्तजिम कहते हैं)।

3) हतीम में खास कर मीजाब रहमत के नीचे।

4) बैतुल्लाह शरीफ के अंदर।

5) सफा व मरवा और सफा व मरवा के दरमियान सई करते वक़्त।

6) मकामे इब्राहिम के पीछे।

7) मशाइर मुकद्दसा (अरफात, मुज्दलफा और मिना) में।

8) जमरा ऊला और जमरा वुस्ता की रमी करने के बाद वहां से जरा दाऐं या बाएं जानिब हट कर।

मुस्तजाबुद दावात बन्दे

वह हज़रात जिनकी दुआऐं क़बूल होती हैं और अहादीस में जिनकी दुआओं के क़बूल होने की बशारत दी गई है

1) मजलूम की दुआ यानी ऐसा शख्स जिसपर किसी तरह का जुल्म हुआ हो। (बुखारी व मुस्लिम)

2) मुजतिर यानी मुसीबत जदा की दुआ। (बुखारी व मुस्लिम)

3) वालिदैन की दुआऐं औलाद के हक़ में तेजी के साथ असर करती है, लिहाज़ा हमेशा उनकी दुआऐं लेते रहना चाहिए और उनकी बद दुआ से हमेशा बचना चाहिए। (मुस्लिम)

4) इसी तरह वह औलाद जो वालिदैन के साथ हुसने सुलूक करे और दिल व जान से उनकी खिदमत करे उनकी दुआओं में भी शाने कबूलियत पैदा हो जाती है।

5) मुसाफिर यानी जो अपने घर बार अहल व अयाल से दूर हो, मुसाफिर चूंकि अपने मक़ाम से दूर होता है, आराम न मिलने की वजह से मजबूर और परेशान होता है जब अपनी बीवी और हाजतमंदी की वजह से दुआ करता है तो उसकी दुआ इखलास से भरी हुई होती है और सिदक दिल से निकलने की वजह से क़बूल होती है। (अबू दाउद)

6) इफतार के वक़्त रोज़ेदार की दुआ क्योंकि यह वक़्त लम्बी भुक प्यास के बाद खाने पीने के लिए नफस के शदीद तकाजे का होता है, चूंकि इसने अल्लाह तआला के एक फरीजा को अंजाम दिया है और अल्लाह तआला की खुशनूदी के लिए भुक प्यास बर्दाशत की है इसलिए कि रोजे इख्तिताम पर बन्दों को यह मक़ाम दिया जाता है कि अगर वह उस वक़्त दुआ करे तो ज़रूर क़बूल की जाएगी। (तिर्मिज़ी)

7) एक मुसलमान की दूसरे मुसलमान के लिए गाइबाना दुआ भी मक़बूल है अपने लिए तो सब दुआ करते हैं मगर उसके साथ अपने मुसलमान भाईयों के लिए भी खुसूसी और अमूमी दुआ करनी चाहिए, खाह कोई दुआ के लिए कहे या नह कहे, दूसरों के लिए दुआ करते रहें क्योंकि एक हदीस में है कि सब दुआओं से बढ़ कर जल्द से

जल्द क़बूल होने वाली दुआ वह है जो गाइब की गाइब के लिए हो। (तिर्मिज़ी) क्योंकि यह दुआ रियाकारी से पाक होती है महज खुलूस और मोहब्बत की बुनियाद पर की जाती है और इसमें इखलास भी ज़्यादा होता है। एक दूसरी हदीस में है कि एक मुसलमान की अपने मुसलमान भाई की गैर हाजरी में की जाने वाली दुआ क़बूल होती है और उसके सर के पास एक फरिश्ता मुक़र्रर होता है जब वह अपने भाई के लिए दुआ करता है तो फरिश्ता आमीन कहता है और यह भी कहता है कि (भाई के हक़ में तुने जो दुआ की है) तेरे लिए भी इस जैसी नेमत व दौलत की खुशखबरी है। (मुस्लिम)

8) हुज्जाज व मुतमेरीन की दुआ, जो शख्स हजर या उमरह के सफर पर निकला हो उसकी दुआ क़बूल होने का वादा हदीस में है, चुनांचे हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि हजर व उमरह के मुसाफिर बारगाहि इलाही के खुसूसी मेहमान हैं अगर यह अल्लाह तआला से दुआ करें तो क़बूल फरमाए और अगर उससे मगफिरत तलब करें तो उनकी बखशिश फरमा दे। (इब्ने माजा)

9) मरीज़ और मुजाहिद फी सबीलिल्लाह की दुआ, अहादीस से साबित है कि मरीज़ जब तक शिफायाब न हो और मुजाहिद जब तक जिहाद से वापस न हो उनकी दुआ भी क़बूल होती है। एक हदीस में है कि जब तुम बीमार के पास जाओ तो उसे दुआ के लिए कहो। (इब्ने माजा) अल्लाह के रास्ते में अपनी जान व माल की क़ुर्बानी देने के लिए निकल खड़ा हुआ तो जब मुजाहिद दुआ करता है तो अल्लाह तआला उसकी दुआ क़बूल फरमाते हैं।

दुआ के क़बूल होने की अलामत

दुआ क़बूल होने की अलामत यह है कि दुआ मांगते वक़्त अपने गुनाहों को याद करना, अल्लाह का खौफ तारी होना, बेइख्तियार रोना आ जाना, बदन के रूऐं खड़े हो जाना, उसके बाद इतिमनान कल्ब और एक किसम की फरहत महसूस होना, बदन हलकान मालूम होने लगना, गोया कंढ़ों पर से किसी ने बुझ उतार लिया हो। जब ऐसी हालत पैदा हो तो अल्लाह की तरफ खुशू व खुजू कल्ब के साथ मुतवज्जह हो कर उसकी खुब हमद व सना और दरूद के बाद अपने लिए, अपने वालिदैन, रिशतेदारों, असातिज़ा और मुलसमानों के लिए गिड़गिड़ा कर दुआऐं करें। इंशाअल्लाह इस कैफियत के साथ की जाने वाली दुआ ज़रूर क़बूल होगी। दुआ की कबूलियत में जल्दी नहीं करनी चाहिए क्योंकि दुआ की कबूलियत का वक़्त मुअय्यन है और नाउम्मीद भी नहीं होना चाहिए और यूं नहीं कहना चाहिए कि मैंने दुआ की थी मगर क़बूल न हुई, अल्लाह तआला के फजल से नाउम्मीद होना मुलसमानों का शेवा नहीं। दुआ की कबूलियत में अल्लाह तआला कभी कभी मतलूब से बेहतर कोई दूसरी चीज इंसान को अता फरमाता है या कोई आने वाली मुसीबत दूर कर देता है।

खुलासा कलाम यह है कि दुआ मतहरे अब्दियत और एक अहम इबादत है। दुआ मुजतरिब कुलूब के लिए सामाने सुकून, गुमराहों के लिए ज़रिया-ए-हिदायत, मुत्तकियों के लिए कुर्बे इलाही का वसीला और गुनाहगारों के लिए अल्लाह की बखशिश व मगफिरत की बादे बहार है। इसलिए हमें दुआ में हरगिज काहिली व सुसती नहीं करनी चाहिए यह बड़ी महरूमी की बात है कि हम दुशमनों से निजात और तरह तरह की मुसीबतों के दूर होने के लिए बहुत सी तदबीरें करते हैं

मगर वह नहीं करते जो हर तदबीर से आसान और हर तदबीर से बढ़ कर मुफीद है (यानी दुआ), इसलिए हमें चाहिए कि इस अहम और मुहतम बिश शाम इबादत के अरकान व शरायत व वाजिबात व मुस्तहबात के साथ और मनहियात व मकरूहात से बचते हुए अपने खालिक व मालिक के सामने थोड़े थोड़े वक़्त पर खुब दुआऐं करें।
अल्लाह तआला हमें सही मानी में अपने से मांगने की तौफीक़ अता फरमाऐं, आमीन।

ज़िक्र इलाही

हमें फर्ज़ की अदाएगी के साथ साथ अपने मालिक, खालिक़, राज़िक़ और गफूर व रहीम के ज़िक्र का एहतेमाम रोज़ाना खास तौर पर सुबह व शाम के वक़्त करना चाहिए, अल्लाह तआला ने क़ुरान करीम में और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने इरशादात में ज़िक्र की बहुत ज़्यादा ताकीद फरमाई है, जिनमें से चंद आयात व अहादीसे शरीफा नीचे लिखे हुए हैं।

अल्लाह तआला क़ुरान करीम में इरशाद फरमाता है "**ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला का बहुत ज़िक्र किया करो और सुबह व शाम उसकी तसबीह बयान किया करो।**" (सूरह अहजाब 41, 42)

अल्लाह तआला क़ुरान करीम में दूसरी जगह इरशाद फरमाता है "**खूब समझ लो, अल्लाह तआला के ज़िक्र ही से दिलों को इतमिनान हुआ करता है।**" (सूरह रअद 28)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो शख्स अल्लाह तआला का ज़िक्र करता है और जो ज़िक्र नहीं करता उन दोनों की मिसाल ज़िन्दा और मुर्दा की तरह है, यानी ज़िक्र करने वाला ज़िन्दा और ज़िक्र न करने वाला मुर्दा। (सही बुखारी)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया उस घर की मिसाल जिसमें अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है ज़िन्दा शख्स की तरह है, यानी वह आबाद है और जिसमें अल्लाह तआला का ज़िक्र नहीं किया जाता वह मुर्दा शख्स की तरह है यानी वह वीरान है। (मुस्लिम)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह तआला के ज़िक्र से बढ़ कर किसी आदमी का कोई अमल अज़ाब से निजात दिलाने वाला नहीं है। (रवाहु तबरानी, मजमउज़ ज़वायद)
नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़िक्र की आम फजीलतों के साथ बाज़ खुसूसी अज़कार में मुअय्यन तादाद की खास फज़ीलत भी ज़िक्र फरमाई है, मसलन:
— हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपनी कमज़ोरी की वजह से एक खादिम तलब किया। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं इससे ज़्यादा बेहतर चीज़ तुम को न बतादूं और वह यह है कि तुम सोने से पहले 33 मरतबा "सुबहानल्लाह", 33 मरतबा "अलहमदु लिल्लाह" और 34 मरतबा "अल्लाहु अकबर" पढ़ लिया करो, यानी इन तसबीहात का एहतेमाम दिन भर की थकान को दूर कर देगा। (बुखारी)

— हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया क्या तुम में से कोई शख्स हर रोज़ एक हज़ार नेकियां कमाने से आजिज़ है? हाज़रीन में से एक ने सवाल किया कि हम में से कोई आदमी एक हज़ार नेकियां किस तरह कमा सकता है? तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो शख्स 100 मरतबा "सुबहानल्लाह" पढ़े उसके लिए एक हज़ार नेकियां लिख दी जाएंगी और उसके एक हज़ार गुनाह माफ कर दिए जाएंगे। (मुस्लिम)

— नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस शख्स ने दिन में 100 मरतबा सबुहानल्लाहि व बिहमदिही पढ़ा तो उसके गुनाह माफ हो जाते हैं ख्वाह समुन्दर के झाग के बराबर ही क्यों न हों। (बुखारी)

नोट - इस तरह के मज़मून पर मुशतमिल अहादीस में गुनाहे सगीरा मुराद होते हैं यानी छोटे छोटे गुनाह माफ हो जाते हैं, लेकिन कबीरा गुनाह की माफी के लिए तौबा शर्त है, नीज़ हुक़ूक़ुल इबाद की माफी के लिए पहली और बुनियादी शर्त बन्दा के हक़ का अदा करना है।

— नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस शख्स ने सुबह और शाम "सुबहानल्लाहि व बेहमदिही" 100 मरतबा पढ़ा तो कोई शख्स क़यामत के दिन इससे अफज़ल अमल ले कर नहीं आएगा सिवाए उस शख्स के जिसने उसके बराबर या उससे ज़्यादा पढ़ा हो। (मुस्लिम)
— नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह के सामने तौबा किया करो, इसलिए कि मैं खुद दिन में 100 मरतबा अल्लाह तआला के सामने तौबा करता हूं। (मुस्लिम)

ज़िक्र इलाही के लिए तसबीह या बाएं हाथ का इस्तेमाल

बहुत सी आहदीस से मालूम होता है कि शरीअते इस्लामिया में बाज़ अज़कार गिनती के साथ भी मतलूब हैं और यह तादाद मुख्तलिफ तरीक़ों से पूरी की जा सकती है मसलन सिर्फ दाएं हाथ की उंगलियों से, दोनों हाथ की उंगलियों से, कंकड़ियों से, खजूर या किसी और चीज़ की गुठली से या इसी तरह तसबीह के ज़रिये। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़िक्र के लिए गिनती करने का कोई खास तरीक़ा मुअय्यन नहीं फरमाया है जैसा कि हदीस में है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने मुबारक हाथ पर तसबीह पढ़ा करते थे (तिर्मिज़ी नसई, इब्ने माजा, अबू दाऊद, मुसनद अहमद, बैहक़ी, इब्ने हिब्बान, इब्ने अबी शैबा, बज़्ज़ार, सही बुखारी) इस हदीस में दाएं या बाएं हाथ की ताईन के बेगैर बयान किया गया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हाथ पर तसबीह पढ़ा करते थे, अलबत्ता अबू दाऊद की एक हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने दाएं हाथ पर तसबीह पढ़ा करते थे। यह हदीस एक सनद के अलावा बाक़ी तमाम सनदों से दाएं (यमीन) लफ्ज़ के बेगैर आई है, इसलिए अक्सर मुहद्दिसीन ने दाएं लफ्ज़ के इज़ाफे को शाज़ तसलीम किया है यानी यमीन का लफ्ज़ रावी (मोहम्मद बिन क़ुदामा) ने अपनी तरफ से बढ़ाया है। इसी तरह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने सहाबए किराम का मुख्तलिफ चीजों पर गिनती करके ज़िक्र करना अहादीसे सहीहा से साबित है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़िन्दगी में

एक मरतबा भी किसी सहाबी को उंगलियों के अलावा किसी और चीज़ पर गिनती करके ज़िक्र करने से नहीं रोका।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दाएं या बाएं हाथ की तहदीद के बेगैर हाथ पर तसबीह पढ़ना साबित है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने हाथ मुबारक की उंगलियों पर तसबीह शुमार करते देखा। (तिर्मिज़ी)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने औरतों को दाएं या बाएं हाथ की तहदीद के बेगैर उंगलियों पर तसबीह पढ़ने का हुकुम दिया। (तिर्मिज़ी)

उम्मुल मोमेनीन हज़रत सफिया बिन्ते हैय रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे पास तशरीफ लाए, मेरे पास चार हज़ार खजूर की गुठलियां रखी हुई थीं जिन पर मैं तसबीह पढ़ा करती थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया हैय की बेटी! यह क्या है? मैंने अर्ज़ किया इन गुठलियों पर मैं तसबीह पढ़ रही हूं। (तिर्मिज़ी)

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैं नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक सहाबिया के पास गया जिनके सामने गुठलियां या कंकड़ियां रखी हुई थीं जिन पर वह तसबीह पढ़ा करती थीं। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु गुठलियों पर तसबीह पढ़ा करते थे। (तिर्मिज़ी)

हज़रत जुवैरिया बिन्त अल हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा गुठलियों पर तसबीह पढ़ा करती थीं। (मुसनद अहमद, अबू दाऊद)

तसबीह के मुतअल्लिक़ मशहूर उलमाए किराम के अक़वाल

बहुत सी अहादीसे सहीहा की रौशनी में अक्सर मुहद्दिसीन, फ़ुक़हा और उलमा की राय यही है कि अज़कार की गिनती के लिए उंगलियों के अलावा खजूर या किसी और चीज़ की गुठली या कंकड़ी या तसबीह का इस्तेमाल किया जा सकता है अगरचे उंगलियों का इस्तेमाल ज़्यादा बेहतर है, क्योंकि यह चीजें मक़सूदे इबादत नहीं हैं बल्कि इबादत का ज़रिया हैं, मसलन मसाजिद में स्पीकर का इस्तेमाल इबादते मक़सूदह नहीं हैं बल्कि इबादत इबादत के एक जुज़ के अदा करने का ज़रिया हैं, लिहाज़ा मसाजिद में स्पीकर के इस्तेमाल की तरह तसबीह का इस्तेमाल भी बिदअत नहीं है। हिन्द व पाक और बंगलादेश के जमहूर उलमा भी (जो कुरान व सुन्नत की रौशनी में इमाम अबू हनीफा की राय को इख्तियार करते हैं) यही फरमाते हैं कि तसबीह पर भी ज़िक्र किया जा सकता है। मशहूर मुफस्सिरे क़ुरान शैख जलालुद्दीन सुयूती मिस्री शाफइ ने अपनी किताब “अलमिनहतु फिस सुबहति” में दलाइल के साथ तसबीह पर ज़िक्र करने के जवाज पर जमहूर उलमा का मौक़िफ तहरीर फरमाया है।

सउदी अरब के मशहूर व मारूफ आलिमे दीन व साबिक़ मुफ्ती आजम शैख अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ ने भी यही वज़ाहत की है जो

उनकी वेबसाइट पर पढ़ी और सुनी जा सकती है जिसमें शैख अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ ने तसबीह के मुतअल्लिक़ सवाल के जवाब में अर्ज़ किया तसबीह या गुठली या कंकड़ी के ज़रिया ज़िक्र करने में कोई हर्ज नहीं है। अलबत्ता उंगलियों के ज़रिये ज़िक्र करना ज़्यादा बेहतर है जैसा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उंगलियों के ज़रिये ज़िक्र किया, लेकिन अहादीस में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बाज़ औरतों को कंकड़ियों पर ज़िक्र करते देखा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे कुछ नहीं कहा। बाज़ नेक लोग कंकड़ियों पर तसबी पढ़ा करते थे, जबकि बाज़ दूसरे सालिहीन से दूसरी चीजों पर भी ज़िक्र करना साबित है, लिहाज़ा इस मसअला में वुसअत है (यानी तसबीह या कंकड़ी वगैरह के ज़रिया भी अल्लाह ताला का ज़िक्र किया जा सकता है) लेकिन उंगलियों पर तसबीह पढ़ना ज़्यादा बेहतर है।
नीज़ शैख अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ ने फरमाया है कि बाएं हाथ से भी तसबीह पढ़ने की गुनजाइश है जो उनकी वेबसाइट पर पढ़ी और सुनी जा सकती है।

अल्लामा इब्ने तैमिया का भी यही क़ौल है। नीज़ फरमाया कि सहाबए किराम का कंकड़ियों पर ज़िक्र करना और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इस पर सुकूत इख्तियार करना अहादीसे सहीहा से साबित है। अल्लामा इब्ने तैमिया ने इक़रार किया है कि बाज़ सहाबए किराम मसलन हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कंकड़ियों पर तसबीह पढ़ा करते थे। (मजमूआ फतावा जिल्द 22 पेज 297)

नोट - सहाबी के किसी अमल पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सुकूत इख्तियार करना भी हदीस है जो उम्मते मुस्लिमा के लिए क़ाबिले अमल है। पूरी उम्मते मुस्लिमा ने सहाबी के किसी अमल पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुकूत को हदीस और क़ाबिले अमल व इस्तिदलाल माना है।
सउदी अरब के मशहूर व मारूफ आलिमे दीन शैख मोहम्मद उसैमीन का भी यही क़ौल है कि तसबीह और बाएं हाथ का इस्तेमाल ज़िक्र के लिए किया जा सकता है, क्योंकि तसबीह की असल यानी सहाबए किराम का कंकड़ियों पर तसबीह पढ़ना अहादीस से साबित है, अलबत्ता उंगलियों से ज़िक्र करना बेहतर है।

सउदी अरब के एक दूसरे मशहूर व मारूफ आलिमे दीन शैख अब्दुल अज़ीज़ बिन फौज़ान बिन सालह अलफौज़ान और इसी तरह शैख मोहम्मद हस्सान की भी यही राय है।

इस मौज़ू पर शैख अब्दुल फत्ताह बिन सालेह अलयाफी का तहक़ीक़ी व तफसीली मक़ाला इस लिंक पर पढ़ा जा सकता है जिसमें उन्होंने साबित किया है कि उम्मते मुस्लिमा खास कर चारों अइम्मा अहादीसे सहीहा की रौशनी में तसबीह पर ज़िक्र करने के जवाज़ के क़ायल हैं।

खुलासए कलाम

मज़कूरा अहादीसे सहीहा व मशाहिरे उलमाए किराम के अक़वाल की रौशनी में ज़िक्रे इलाही के लिए सिर्फ दाहिना हाथ या दोनों हाथ या तसबीह वगैरह का इस्तेमाल बेगैर किसी कराहियत के किया जा सकता है। अगर कोई शख्स दोनों हाथ या तसबीह के ज़रिये ज़िक्र करता है तो किसी शख्स को यह हक़ हासिल नहीं है कि वह इस अमल को बिदअत कहे या उस शख्स को उसके अमल से रोकने की कोशिश करे, क्योंकि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कंकड़ी या गुठली वगैरह पर सहाबए किराम या सहाबियात को ज़िक्र करने से कभी नहीं रोका, इसी तरह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या किसी सहाबी या ताबेई या तबे ताबेई से बाएं हाथ पर ज़िक्र करने से कोई इंकार हदीस की किसी किताब में नहीं मिलता तो हमें क्या हक़ हासिल है कि हम किसी शख्स को बाएं हाथ पर या तसबीह पर ज़िक्र करने से रोकें। अगर ज़िक्र करने के लिए सिर्फ दाएं हाथ पर ही इकतिफा ज़रूरी है तो क़ुरान करीम को छूने, उसकी तबाअत और जिल्दसाज़ी के लिए, इसी तरह बैतुल्लाह का गिलाफ तैयार करने और उसको बैतुल्लाह पर चढ़ाने, नीज़ मस्जिद की तामीर और जाए नमाज़ वगैरह को तैयार करने में सिर्फ दाहिने हाथ के इस्तेमाल पर ही इकतिफा करना होगा।

दरूद शरीफ की अहमियत और उसके फज़ाइल

अल्लाह तआला क़ुरान शरीफ में इरशाद फरमाता है "**अल्लाह तआला नबी पर रहमतें नाज़िल फरमाता है और फरिशते नबी के लिए दुआए रहमत करते हैं, ऐ ईमान वालो! तुम भी नबी पर दरूद व सलाम भेजा करो**" (सूरह अहज़ाब 56)

इस आयत में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस मक़ाम का बयान है जो आसमानों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हासिल है और वह यह है कि अल्लाह तआला फरिशतों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र फरमाता है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर रहमतें भेजता है और फरिशते भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरजात की बुलंदी के लिए दुआएं करते हैं, इसके साथ अल्लाह तआला ने ज़मीन वालों को हुकुम दिया कि वह भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजा करें।

हदीस में आता है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो सहाबा-ए-किराम ने पूछा या रसूलुल्लाह! सलाम का तरीका तो हम जानते है यानी नमाज़ में अस्सलामु अलैका ऐयुहन्नबीयू पढ़ना, हम दरूद किस तरह पढ़े? इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दरूदे इब्राहिम बयान फरमाया जो नमाज़ में अत्तहयिात पढ़ने के बाद पढ़ा जाता है। (बुखारी)

मानी सलात- "अल्लाह तआला का नबी पर दरूद भेजने का मतलब" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर रहमते नाज़िल करना और फरिशतों मे उनका ज़िक्र फरमाना है, फरिशतों या मुसलमानो का

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजने का मतलब आप पर रहमत नाज़िल करने और दरजात की बुलंदी के लिए अल्लाह से दुआ करना है।

दरूद शरीफ पढ़ने के फज़ाइल

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने मुझ पर एक मरतबा दरूद भेजा अल्लाह तआला उस पर 10 मरतबा रहमतें नाज़िल फरमाएगा। (मुस्लिम)

अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने मुझ पर एक मरतबा दरूद भेजा अल्लाह तआला उसपर 10 मरतबा रहमतें नाज़िल फरमाएगा और उसके 10 गुनाह माफ फरमाएगा और उसके 10 दरजे बुलन्द फरमाएगा। (नसई)

दरूद शरीफ पढ़ने वाले के खुलूस व तक़वा की वजह से दरूद शरीफ पढ़ने का सवाब अहादीस मे मुख्तलिफ ज़िक्र किया गया है।

अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो शख्स मुझ पर कसरत के साथ दरूद भेजता है क़यामत के रोज़ सबसे ज़्यादा मेरे करीब होगा। (तिर्मीज़ी)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कसरत से दरूद भेजना (छोटे) गुनाहों की माफी का सबब बनेगा। (तिर्मीज़ी)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जब तक मुझ पर दरूद न भेजा जाए, दुआ क़बूलियत से रोक दी जाती है। (तबरानी)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया रूसवा हो वह शख्स जिसके सामने मेरा नाम लिया जाए और वह दरूद न पढ़े। (तिर्मीज़ी)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इस्मे मुबारक सुन कर दरूद न पढ़ने वाले के लिए हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम ने बददुआ फरमाई है, हलाकत हो उस शख्स के लिए जिसके सामने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम लिया जाए और वह दरूद न भेजे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस पर आमीन कहा। (हाकिम)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसके सामने मेरा नाम लिया जाए और वह दरूद न पढ़े वह बखील है। (तिर्मीज़ी)

दरूद शरीफ के मुख्तलिफ अल्फ़ाज़ अहादीस में वारिद हुए है, अलबत्ता मज़कूरा अल्फ़ाज़ (दरूदे इब्राहिम) सबसे अफ़ज़ल है।

“अल्लाहुम्मा सल्लि अला आखिर तक” ऐ अल्लाह! मोहम्मद और आले मोहम्मद पर इसी तरह रहमते नाज़िल फरमा जिस तरह तूने इब्राहिम पर नाज़िल फरमाए।“

आले मोहम्मद से क्या मुराद है? इस सिलसिला में उलमा के चंद अक़वाल हैं, अलबत्ता ज़्यादा सही यह है कि आले मोहम्मद से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद, अज़वाजे मुतहहरात, सहाबा-ए-किराम और दीने इस्लाम के मुत्तबेइन मुराद है, वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

दरूद पढ़ने के अहम मवाक़े

1) नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इस्मे मुबारक सुनते, पढ़ते या लिखते वक़्त दरूद शरीफ पढ़ना चाहिए जैसा कि अहादीस में बयान किया गया है, सिर्फ (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भी कहा जा सकता है।

2) आखिरी तशहहुद में अत्तहयिात पढ़ने के बाद।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब कोई नमाज़ पढ़े तो अल्लाह तआला की हमद व सना से शुरू करे, फिर तशहहुद में अल्लाह तआला के नबी पर दरूद भेजे और उसके बाद दुआ मांगे। (तिर्मीज़ी)

नमाज़ के आखिरी तशहहुद में अत्तहयिात पढ़ने के बाद दरूद शरीफ पढ़ना वाजिब है या सुन्नते मुअक्कदा, इस सिलसिला में उलमा की राय मुख्तलिफ है अलबत्ता हमें हर नमाज़ के आखिरी तशहहुद में (चाहे फ़र्ज़ नमाज़ हो या नफल) दरूद शरीफ पढ़ने का खास एहतेमाम करना चाहिए।

3) अज़ान सुनने के बाद दुआ मांगने से पहले।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब मुअज़्ज़िन की अज़ान सुनो तो वही कलेमात दुहराओ जो मुअज़्ज़िन कहता है, फिर मुझ पर दरूद पढ़ो, क्योंकि मुझ पर दरूद पढ़ने वाले पर अल्लाह तआला दस रहमते नाज़िल फरमाता है, (फिर अज़ान के बाद की दुआ पढ़ो)। (मुस्लिम)

4) जुमा के दिन कसरत से दरूद शरीफ पढ़ें।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जुमा के रोज़ मुझ पर कसरत से दरूद भेजा करो, जो आदमी जुमा के रोज़ मुझ

पर दरूद भेजता है वह मेरे सामने पेश किया जाता है। (हाकिम व बैहक़ी)

5) कोई भी दुआ मांगने से पहले अल्लाह तआला की हम्द व सना के बाद दरूद शरीफ पढ़ें।

एक शख्स (मस्जिद में) आया, नमाज़ पढ़ी और नमाज़ से पढ़ने के बाद दुआ करने लगा या अल्लाह मुझे माफ फरमा, मुझ पर रहम फरमा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ऐ शख्स तुने दुआ मांगने में जल्दी की, जब नमाज़ पढ़ो और दुआ के लिए बैठो तो पहले हम्द व सना पढ़ो, फिर मुझ पर दरूद भेजो फिर अपने लिए दुआ करो। (तिर्मीज़ी)

6) जब भी मौका मिले दरूद शरीफ पढ़ें।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरी कब्र को मेला न बनाओ और न ही अपने घर को कब्रिस्तान बनाओ, तुम जहाँ कही भी हो मुझ पर दरूद भेजते रहो, तुम्हारा दरूद मुझे पहुंचा दिया जाता है। (मुसनद अहमद)

लेखक का परिचय

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब क़ासमी का तअल्लुक़ सम्भल (यूपी) के इल्मी घराने से है, उनके दादा मशहूर मुहद्दिस, मुक़र्रिर और स्वतंत्रता सेनानी मौलाना मोहम्मद इसमाईल सम्भली (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ मदरसों में तक़रीबन 17 साल बुखारी शरीफ का दर्स दिया, जबकि उनके नाना मुफ्ती मुशर्रफ हुसैन सम्भली (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ मदरसों में इफता की ज़िम्मेदारी निभाने के साथ साथ बुखारी व हदीस की दूसरी किताबें भी पढ़ाईं।

डाक्टर नजीब क़ासमी ने इब्तिदाई तालीम सम्भल में ही हासिल की, चुनांचे मिडिल स्कूल पास करने के बाद अरबी तालीम का आगाज़ किया। इसी बीच 1986 में यूपी बोर्ड से हाई स्कूल भी पास किया। 1989 में दारुल उलूम देवबन्द में दाखिला लिया। दारुल उलूम देवबन्द के क़याम के दौरान यूपी बोर्ड से इन्टरमीडिएट का इमतिहान पास किया। 1994 में दारुल उलूम देवबन्द से फरागत हासिल की। दारुल उलूम देवबन्द से फरागत के बाद जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली से B.A (Arabic) और तरजुमे के दो कोर्स किए, उसके बाद दिल्ली यूनिवार्सिटी से M.A. (Arabic) किया।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली के अरबी विभाग की जानिब से मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब क़ासमी को "अल जवानिबुल अदबिया वल बलागिया वल जमालिया फिल हदीसिन नबवी" यानी हदीस के अदबी व बलागी व जमाली पहलू पर दिसम्बर 2014 में डाक्टरेट की डिग्री से सम्मानित किया गया। डाक्टर मोहम्मद नजीब क़ासमी ने प्रोफेसर डाक्टर शफीक अहमद खां नदवी भूतपूर्व सदर अरबी विभाग और प्रोफेसर रफीउल इमाद फायनान की अंतर्गत में

अरबी ज़बान में 480 पृष्ठों पर मुशतमिल अपना तहक़ीक़ी मक़ाला पेश किया। डाक्टर मोहम्मद नजीब क़ासमी ने बहुत सी किताबें उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी जबानों में तहरीर की है। 1999 से रियाज़ (सऊदी अरब) में बरसरे रोज़गार हैं। कई सालों से रियाज़ शहर में हज तरबियती कैम्प भी मुनअक़िद कर रहे हैं। उनके मज़ामीन उर्दू अख़बारों में प्रकाशित होते रहते हैं।

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब क़ासमी की वेब साइट (www.najeebqasmi.com) को काफी मक़बूलियत हासिल हुई है जिसकी मोबाइल ऐप (Deen-e-Islam) तीन जबानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है जिसमें मुख्तलिफ इस्लामी मौज़ूआत पर मज़ामीन के साथ उनकी किताबें और बयानात हैं।

हज व उमरह से मुतअल्लिक़ खुसूसी ऐप (Hajj-e-Mabroor) भी तीन ज़बानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है, जिन से सफर के दौरान हत्ताकि मक्का, मिना, मुज़दल्फा और अरफात में भी इस्तिफादा किया जा सकता है।

हिंदुस्तान और पाकिस्तान के मश्हूर उलमा, दीनी इदारों और मुख्तलिफ मदरसों ने दोनों Apps (दुन्या की पहली मोबाइल ऐपस) की ताईद में खुतूत तहरीर फरमा कर अवाम व खवास से दोनों Apps से फायदा उठाने की अपील की है।

http://www.najeebqasmi.com/
najeebqasmi@gmail.com
MNajeeb Qasmi - Facebook
Najeeb Qasmi - YouTube
Whatsapp: 00966508237446

First Islamic Mobile Apps on the world in 3 languages:
Deen-e-Islam & Hajj-e-Mabroor

AUTHOR'S BOOKS

IN URDU LANGUAGE:

حج مبرور، مختصر حج مبرور، حی علی الصلاۃ، عمرہ کا طریقہ، تحفۂ رمضان، معلومات قرآن، اصلاحی مضامین جلد ۱،
اصلاحی مضامین جلد ۲، قرآن وحدیث: شریعت کے دو اہم ماخذ، سیرت النبی ﷺ کے چند پہلو،
زکوٰۃ وصدقات کے مسائل، فیملی مسائل، حقوق انسان اور معاملات، تاریخ کی چند اہم شخصیات، علم وذکر

IN ENGLISH LANGUAGE:

Quran & Hadith - Main Sources of Islamic Ideology
Diverse Aspects of Seerat-un-Nabi
Come to Prayer, Come to Success
Ramadan - A Gift from the Creator
Guidance Regarding Zakat & Sadaqaat
A Concise Hajj Guide
Hajj & Umrah Guide
How to perform Umrah?
Family Affairs in the Light of Quran & Hadith
Rights of People & their Dealings
Important Persons & Places in the History
An Anthology of Reformative Essays
Knowledge and Remembrance

IN HINDI LANGUAGE:

क़ुरान और हदीस - इस्लामी आइडयोलॉजी के मैन सोर्स
सीरतुन नबी के मुख़्तलफि पहलू
नमाज़ के लिए आओ, सफलता के लिए आओ
रमज़ान - अल्लाह का एक उपहार
ज़कात और सदक़ात के बारे में गाइडेंस
हज और उमराह गाइड
मुख़्तसर हज्जे मबरूर
उमरह का तरीका
पारविारकि मामले क़ुरान और हदीस की रोशनी में
लोगों के अधकिार और उनके मामलात
महत्वपूर्ण वयक्ति और स्थान
सुधारात्मक निबंध का एक संकलन
इल्म और जिक्र

First Islamic Mobile Apps of the world in 3 languages
(Urdu, Eng.& Hindi) in iPhone & Android by Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

DEEN-E-ISLAM HAJJ-E-MABROOR